



विज्ञान पन्ना: 08

Ghusee Ka Ilaj (Hindi)

तख़्ज़ीज शुदा

# गुस्से का का इलाज

- ✽ अक्सर लोग गुस्से के सबब जहन्नम में जाएंगे
- ✽ गुस्से का अ-मली इलाज
- ✽ सात ईमान अफ़सोज़ हिकायात
- ✽ पेशगी मुआफ़ करने की फ़ज़ीलत
- ✽ गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर
- ✽ ग़लियों भरे ख़ुतूत पर आ'सा हज़रत का सब
- ✽ गुस्से की आदत निकालने के लिये 4 अक्व़ाद

शैख़े तरीक़त, अमीर अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अब्दुल्लाहा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि २-जवी كاتبته السّامية

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़

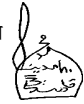
लीजिये ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **اللّٰهُ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ! (المستطرف ج 1 ص 4 دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना  
व बकीअ  
व मरिफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

### गुस्से का इलाज

येह रिसाला (गुस्से का इलाज)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)**

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद

के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

(786) फ़ेहरिस (92)

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
गुस्से का इलाज	2	गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत	13
शैतान के तीन जाल	2	जवाबी कारवाई पर शैतान की आमद	14
अक्सर लोग गुस्से के सबब		जो चुप रहा उस ने नजात पाई	15
जहन्नम में जाएंगे	5	कर भला हो भला	15
गुस्से की ता'रीफ़	5	नरमी ज़ीनत बख़्शती है	16
“गुस्से से रब्बे पाक की पनाह”		पेशगी मुआफ़ करने की फ़ज़ीलत	16
के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से		गुस्सा पीने वाले के लिये जन्मती हूर	16
गुस्से से जनम लेने वाली		हि़साब में आसानी के तीन अस्बाब	16
16 बुग़डियों की निशान देही	5	गालियों भरे खुतूत पर आ'ला हज़रत	
गुस्से का अ-मली इलाज	7	का सब्र	17
जन्नत की बिशारत	7	मालिक बिन दीनार के सब्र के अन्वार	18
ताक़त वर कौन ?	8	नेक बन्दे च्यूंटियों को भी ईज़ा नहीं देते	19
गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत	8	क्या गुस्सा ह़राम है ?	19
सात ईमान अफ़ोज़ हि़कायात	8	दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब	21
किसी पर गुस्सा आए तो यूँ इलाज करें	11	चार यार की निस्बत से गुस्से की	
गुलाम ने देर कर दी	11	आदत निकालने के लिये 4 अवराद	21
पिट्टाई का कफ़़ारा	12	“अख़्लाके रहमते आलम”	
दर गुज़र ही में आफ़ियत	12	के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से	
नमक ज़ियादा डाल दिया	13	गुस्से के 13 इलाज	22

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## गुस्से का इलाज<sup>1</sup>

ग़ालिबन आप को शैतान येह रिसाला ( 23 सफ़हात ) पूरा नहीं पढ़ने देगा मगर आप कोशिश कर के पूरा पढ़ कर शैतान के वार को नाकाम बना दीजिये ।

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, हबीबे परवर्द गार शफ़ीए रोजे शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि नूरबार है : “मैं ने गुज़शता रात अज़ीब वाकि़आ देखा, मैं ने अपने एक उम्मती को देखा जो पुल सिरात पर कभी घिसट कर चल रहा था और कभी घुटनों के बल चल रहा था, इतने में वोह दुरूद शरीफ़ आया जो उस ने मुझ पर भेजा था, उस ने उसे पुल सिरात पर खड़ा कर दिया यहां तक कि उस ने पुल सिरात को पार कर लिया ।

(المعجم الكبير ج ٢٥ ص ٢٨١، ٢٨٢ حديث ٣٩ داراحياء التراث العربى بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### शैतान के तीन जाल

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ هُجْرَتُهُ سَبِيحَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ ابْنِ عَبَّاسٍ ابْنِ عَبَّاسٍ

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा 'वते इस्लामी के तीन रोज़ा इज्तिमाअ (24, 25, 26 र-जबुल मुर्ज्जब 1419 सि.हि. मदीनतुल औलिया अहमदआबाद अल हिन्द) में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (मुस्लम)

तम्बीहुल गाफ़िलीन में नक्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल के एक बुजुर्ग एक बार कहीं तशरीफ़ ले गए। रास्ते में एक मौक़अ़ पर अचानक पथ्थर की एक चट्टान ऊपर की जानिब से सर के क़रीब आ पहुंची, उन्होंने ने ज़िक़ुल्लाह शुरूअ़ कर दिया तो वोह दूर हट गई। फिर ख़ौफ़नाक शेर और दरिन्दे जाहिर होने लगे मगर वोह बुजुर्ग न घबराए और ज़िक़ुल्लाह में लगे रहे। जब वोह बुजुर्ग नमाज़ में मशगूल हुए तो एक सांप पाउं से लिपट गया, यहां तक कि सारे बदन पर फिरता हुवा सर तक पहुंच गया, वोह बुजुर्ग जब सज्दे का इरादा फ़रमाते वोह चेहरे से लिपट जाता सज्दे के लिये सर झुकाते येह लुक़्मा बनाने के लिये जा-ए सज्दा पर मुंह खोल देता। मगर वोह बुजुर्ग उसे हटा कर सज्दा करने में काम्याब हो जाते। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो शैतान खुल कर सामने आ गया और कहने लगा : येह सारी ह-र-कते मैं ने ही आप के साथ की हैं आप बहुत हिम्मत वाले हैं, मैं आप से बहुत मु-तअस्सिर हुवा हूं, लिहाज़ा अब मैं ने येह तै कर लिया है कि आप को कभी नहीं बहकाऊंगा, मेहरबानी फ़रमा कर आप मुझ से दोस्ती कर लीजिये। उस इस्राईली बुजुर्ग ने शैतान के इस वार को भी नाकाम बनाते हुए फ़रमाया : तू ने मुझे डराने की कोशिश की लेकिन الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं डरा नहीं, मैं तुझ से हरगिज़ दोस्ती नहीं करूंगा। बोला : अच्छ, अपने अहलो इयाल का अहवाल मुझ से दरयाफ़्त कर लीजिये कि आप के बा'द उन पर क्या गुज़रेगी। फ़रमाया : मुझे तुझ से पूछने कि ज़रूरत नहीं। शैतान

फ़रमाने मुस्ताफ़ा ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

ने कहा : फिर येही पूछ लीजिये कि मैं लोगों को किस तरह बहकाता हूं। फ़रमाया : हां येह बता दे। बोला, मेरे तीन जाल हैं : (1) बुख़्ल (2) गुस्सा (3) नशा। अपने तीनों जालों की वज़ाहत करते हुए बोला, जब किसी पर “बुख़्ल” का जाल फेंकता हूं तो वोह माल के जाल में उलझ कर रह जाता है उस का येह जेहन बनाता रहता हूं कि तेरे पास माल बहुत क़लील है (इस तरह वोह बुख़्ल में मुब्तला हो कर) हुकूके वाजिबा में खर्च करने से भी बाज़ रहता है और दूसरे लोगों के माल की तरफ़ भी माइल हो जाता है। (और यूं माल के जाल में फंस कर नेकियों से दूर हो कर गुनाहों के दलदल में उतर जाता है।) जब किसी पर गुस्से का जाल डालने में काम्याब हो जाता हूं तो जिस तरह बच्चे गेंद को फेंकते और उछालते हैं, मैं उस गुसीले शख्स को शयातीन की जमाअत में इसी तरह फेंकता और उछालता हूं। गुसीला शख्स इल्मो अमल के कितने ही बड़े मरतबे पर फ़ाइज़ हो, ख़्वाह अपनी दुआओं से मुर्दे तक ज़िन्दा कर सकता हो, मैं उस से मायूस नहीं होता, मुझे उम्मीद होती है कि कभी न कभी वोह गुस्से में बे क़ाबू हो कर कोई ऐसा जुम्ला बक देगा जिस से उस की आख़िरत तबाह हो जाएगी। रहा “नशा” तो मेरे इस जाल का शिकार या’नी शराबी इस को तो मैं बकरी की तरह कान पकड़ कर जिस बुराई की तरफ़ चाहूं लिये लिये फिरता हूं। इस तरह शैतान ने येह बता दिया, कि जो शख्स गुस्सा करता है वोह शैतान के हाथ में ऐसा है, जैसे बच्चों के हाथ में गेंद। इस लिये गुस्सा करने वाले को सब्र करना चाहिये, ताकि शैतान का कैदी न बने कि कहीं अमल ही जाएअ न कर बैठे।

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अन्न)

## अक्सर लोग गुस्से के सबब जहन्नम में जाएंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बुजुर्ग की गुफ्त-गू में शैतान ने येह बात भी बताई है कि गुसीला इन्सान शैतान के हाथ में इस तरह होता है जैसे बच्चों के हाथ में गेंद । लिहाज़ा गुस्से का इलाज करना ज़रूरी है । कहीं ऐसा न हो कि गुस्से के सबब शैतान सारे आ'माल बरबाद करवा डाले । कीमियाए सअदत में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “गुस्से का इलाज और इस बाब में मेहनतो मशक्कत बरदाश्त करना फ़र्ज है, क्यूं कि अक्सर लोग गुस्से ही के बाइस जहन्नम में जाएंगे ।”

(किमियाए سعادت ج ۲ ص ۶۰۱ انتشارات گنجینه تهران) सय्यिदुना हसन बसरी (احياء العلوم ج ۳ ص ۲۰۵ دارصادر بيروت) फ़रमाते हैं, ऐ आदमी ! गुस्से में तू ख़ूब उछलता है, कहीं अब की उछाल तुझे दोज़ख़ में न डाल दे ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

## गुस्से की ता'रीफ़

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ फ़रमाते हैं : “ग़ज़ब या'नी गुस्सा नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़अ (दूर) करने पर उभारे ।” (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 655, ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

“गुस्से से रब्बे पाक की पानाह” के सोलह हुस्फ़ की निस्बत से गुस्से से जनम लेने वाली 16 बुराइयों की निशान देही गुस्से के सबब बहुत सारी बुराइयां जनम लेती हैं जो आख़िरत के लिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَمَد)

तबाह कुन हैं म-सलन : ﴿1﴾ हसद ﴿2﴾ गीबत ﴿3﴾ चुगली ﴿4﴾ कीना  
 ﴿5﴾ क़टए तअल्लुक़ ﴿6﴾ झूट ﴿7﴾ आबरू रेज़ी ﴿8﴾ दूसरे को हकीर  
 जानना ﴿9﴾ गाली गलोच ﴿10﴾ तकब्बुर ﴿11﴾ बे जा मारधाड़ ﴿12﴾  
 तमस्बुर (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) ﴿13﴾ क़टए रेहमी ﴿14﴾ बे मुरव्वती  
 ﴿15﴾ शमातत या'नी किसी के नुक़सान पर राज़ी होना ﴿16﴾ एहसान  
 फ़रामोशी वग़ैरा । वाक़ेई जिस पर गुस्सा आ जाता है, उस का अगर  
 नुक़सान हो जाए तो गुस्से होने वाला खुशी महसूस करता है, अगर उस  
 पर कोई मुसीबत आती है तो येह राज़ी होता है, उस के सारे एहसानात  
 भूल जाता है और उस से तअल्लुक़ात ख़त्म कर देता है । बा'जों का  
 गुस्सा दिल में छुपा रहता है और बरसों तक नहीं जाता इसी गुस्से की  
 वज्ह से वोह शादी ग़मी के मवाक़ेअ पर शिक़त नहीं करता । बा'ज  
 लोग अगर ब ज़ाहिर नेक भी होते हैं फिर भी जिस पर गुस्सा दिल में  
 छुपा कर रखते हैं, उस का इज़हार यूं हो जाता है कि अगर पहले उस पर  
 एहसान करते थे तो अब नहीं करते, अब उस के साथ हुस्ने सुलूक से  
 पेश नहीं आते, न हमदर्दी का मुज़ा-हरा करते हैं, अगर उस ने कोई  
 इज्तिमाए ज़िक़्रो ना'त वग़ैरा का एहतिमाम किया तो مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ  
 महज़ नफ़्स के लिये होने वाली नाराज़ी और गुस्से की वज्ह से उस में  
 शिक़त से अपने आप को महरूम कर लेते हैं । बा'ज रिश्तेदार ऐसे भी  
 होते हैं कि उन के साथ आदमी लाख हुस्ने सुलूक करे मगर वोह राह  
 पर आते ही नहीं मगर हमें मायूस नहीं होना चाहिये । “जामेए सग़ीर”  
 में है : صَلِّ مَنْ قَطَعَكَ يَا'नी “जो तुझ से रिश्ता काटे तू उस से जोड़ ।”



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मौलाना रूमी फ़रमाते हैं,

तू बराए वस्ल करदन आ-मदी

ने बराए फ़स्ल करदन आ-मदी

(या'नी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया।)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

### गुस्से का अ-मली इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुस्से का अ-मली इलाज इस तरह हो सकता है कि गुस्सा पी जाने और दर गुज़र से काम लेने के फ़ज़ाइल से आगाही हासिल करे, जब कभी गुस्सा आए इन फ़ज़ाइल पर ग़ौरो फ़िक्र कर के गुस्से को पीने की कोशिश करे, बुख़ारी शरीफ़ में है, एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में अर्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुझे वसियत फ़रमाइये। इर्शाद फ़रमाया : “गुस्सा मत करो।” उस ने बार बार येही सुवाल किया। जवाब येही मिला : “गुस्सा मत करो” (صحيح البخارى ج ٤ ص ١٣١ حديث ٦١١٦)

### जन्नत की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं, कि मैं ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे कोई ऐसा अमल इर्शाद फ़रमाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे, सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “لَا تَغْضَبْ وَلَكِ الْجَنَّةُ” या'नी गुस्सा न करो, तो तुम्हारे लिये जन्नत है।

(مجمع الزوائد، ج ٨، ص ١٣٤ حديث ١٢٩٩٠ دارالفكر بيروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुत्बाएल)

## ताक़त वर कौन ?

बुख़ारी में है : “ताक़त वर वोह नहीं जो पहलवान हो दूसरे को पछाड़ दे बल्कि ताक़त वर वोह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप को काबू में रखे।” (صحیح البخاری ج ٤ ص ١٣٠ حدیث ٦١١٤ دارالکتب العلمیة بیروت)

## गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत

कन्जुल उम्माल में है : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जो गुस्सा पी जाएगा हालां कि वोह नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से मा'मूर फ़रमा देगा। (کتر العُمَال ج ٣ ص ١٦٣ حدیث ٧١٦٠ دارالکتب العلمیة بیروت) गुस्से का एक इलाज येह भी है कि गुस्सा लाने वाली बातों के मौक़अ पर बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْبَشِيْرِيْنَ के तर्जे अमल और इन की हिकायात को जेहन में दोहराए :

## सात इम़ान अफ़रोज़ हिकायात

हिकायात 1 : कीमियाए सआदत में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِيْ نَقَلَ فَرَمَاتِهِ هَيْ : किसी शख्स ने हज़रते अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से सख़्त कलामी की। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सर झुका लिया और फ़रमाया : “क्या तुम येह चाहते हो कि मुझे गुस्सा आ जाए और शैतान मुझे तकब्बुर और हुकूमत के गुरूर में मुब्तला करे और मैं तुम को जुल्म का निशाना बनाऊं और बरोजे क़ियामत तुम मुझ से इस

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातर है (البرقلى) ۱

का बदला लो मुझ से यह हरगिज़ नहीं होगा ।” यह फ़रमा कर ख़ामोश हो गए ।  
(کیمیای سعادت ج ۲ ص ۵۹۷ انتشارات گنجینه تهران)

**हिकायत 2 :** किसी शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी को गाली दी । उन्होंने ने फ़रमाया : “अगर बरोजे क़ियामत मेरे गुनाहों का पल्ला भारी है तो जो कुछ तुम ने कहा मैं उस से भी बदतर हूँ और अगर मेरा वोह पल्ला हलका है तो मुझे तुम्हारी गाली की कोई परवाह नहीं ।”  
(اتحاد السادة المتقين ج ۹ ص ۴۱۶ دارالکتب العلمیة بیروت)

**हिकायत 3 :** किसी ने हज़रते सय्यिदुना शैख़ रबीअ बिन खुसैम तअ़ाला ने तेरे कलाम को सुन लिया है मेरे और जन्नत के दरमियान एक घाटी हाइल है मैं उसे तै करने में मस्रूफ़ हूँ अगर तै करने में काम्याब हो गया तो मुझे तुम्हारी गाली की क्या परवाह ! और अगर मैं उसे तै करने में नाकाम रहा तो तुम्हारी गाली मेरे लिये ना काफ़ी है ।”  
(الضّأ)

**हिकायत 4 :** अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ को किसी ने गाली दी, इर्शाद फ़रमाया : “मेरे तो इस तरह के और भी उयूब हैं । जो अल्लाह तअ़ाला ने तुझ से पोशीदा रखे हैं ।”  
(احیاء العلوم ج ۳ ص ۲۱۲ دارصادر بیروت)

**हिकायत 5 :** किसी शख़्स ने सय्यिदुना शअ़बी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को गाली दी आप ने फ़रमाया : “अगर तू सच कहता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरी मग़िफ़रत फ़रमाए और अगर तू झूट कहता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

तेरी मग़िफ़रत फ़रमाए।”

(احیاء العلوم ج ۳ ص ۲۱۲ دارصادر بیروت)

**हिकायत 6 :** हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में अर्ज़ की गई, हुज़ूर! फुलां आप को बुरा भला कह रहा था। फ़रमाया : **ख़ुदा की क़सम !** मैं तो शैतान को नाराज़ ही करूंगा, फिर दुआ मांगी, **या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ !** उस शख़्स ने मेरी जो जो बुराइयां बयान कीं अगर वोह मुझ में हैं तो मुझे मुआफ़ फ़रमा दे और मेरी इस्लाह फ़रमा। और अगर उस ने मुझ पर झूटे इल्ज़ामात रखे हैं तो उस को मुआफ़ी से नवाज़ दे।

**हिकायत 7 :** एक शख़्स सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को सरे आ़म बुरा भला कहे जा रहा था मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़ामोश थे। किसी ने अर्ज़ की, आप जवाबी कारवाई क्यूं नहीं फ़रमाते ? फ़रमाया : “मैं इस की किसी **बुराई** से वाकिफ़ ही नहीं जिस के सबब इसे बुरा कह सकूं, **बोहतान** बांध कर सख़्त गुनहगार क्यूं बनूं !” **سُبْحَانَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ !** येह हज़रते कुदसिय्या कितने भले इन्सान हुवा करते थे और किस अहूसन अन्दाज़ में **गुस्से का इलाज** फ़रमा लिया करते थे। उन्हें अच्छी तरह मा'लूम था कि अपने नफ़्स के वासिते **गुस्सा** कर के मदे मुक़ाबिल पर चढ़ाई करने में भलाई नहीं है।

*सुन लो नुक्सान ही होता है बिल आख़िर उन को*

*नफ़्स के वासिते गुस्सा जो किया करते हैं*

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّ وَجَلُّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

## किसी पर गुस्सा आए तो यूँ इलाज करें

गुस्से की तबाह कारियों को भी पेशे नज़र रखिये क्यूं कि गुस्सा ही अक्सर दंगा फ़साद, दो भाइयों में इफ़्तिराक, मियां बीवी में तलाक़, आपस में मुना-फ़रत और क़त्लो ग़ारत का मूजिब होता है। जब किसी पर गुस्सा आए और मारधाड़ और तोड़ताड़ कर डालने को जी चाहे तो अपने आप को इस तरह समझाइये : मुझे दूसरों पर अगर कुछ कुदरत हासिल भी है तो उस से बेहद ज़ियादा अल्लाह عُزَّ وَجَلُّ मुझ पर क़ादिर है अगर मैं ने गुस्से में किसी की दिल आज़ारी या हक़ त-लफ़ी कर डाली तो क़ियामत के रोज़ अल्लाह عُزَّ وَجَلُّ के ग़ज़ब से मैं किस तरह महफूज़ रह सकूंगा ?

## गुलाम ने देर कर दी

शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक गुलाम को किसी काम के लिये तलब फ़रमाया, वोह देर से हाज़िर हुवा तो हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दस्ते मुनव्वर में मिस्वाक थी फ़रमाया : “अगर क़ियामत में इन्तिक़ाम न लिया जाता तो मैं तुझे इस मिस्वाक से मारता।” (مُسْنَدُ ابُو يَعْلَى ج ٦ ص ٩٠ حديث ٦٨٩٢ دارالکتب العلمیة بیروت)

देखा आपने ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कभी भी अपने नफ़्स की ख़ातिर इन्तिक़ाम नहीं लेते थे और एक आज कल का मुसल्मान है कि अगर नौकर किसी काम में कोताही कर दे तो गालियों की बोछाड़ बल्कि मारधाड़ पर उतर आता है।

फरमाने मुस्त्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (ज़ैदीय)

## पिटार्ई का कफ़ारा

मुस्लिम शरीफ़ में है, हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊद अन्सारी फ़रमाते हैं : मैं अपने गुलाम की पिटार्ई कर रहा था कि मैं ने अपने पीछे से आवाज़ सुनी, “ऐ अबू मस्ऊद ! तुम्हें इल्म होना चाहिये कि तुम इस पर जितनी कुदरत रखते हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से ज़ियादा तुम पर कुदरत रखता है। मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ थे। मैं ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह يَا نَبِيَّ اللهِ هُوَ خَيْرٌ لِّوَجْهِ اللهِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिये आज़ाद है। सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुक़र्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अगर तुम येह न करते तो तुम्हें दोज़ख़ की आग जलाती या फ़रमाया कि तुम्हें दोज़ख़ की आग छूती।

(صحيح مسلم ص ۹۰۰ حديث ۳۰- ۱۶۵۸ دار ابن حزم بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## दर गुज़र ही में आफ़ियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा ! हमारे सहाबए किराम عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अल्लाह व रसूल عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से किस क़दर प्यार करते थे। हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊद अन्सारी ने जूँ ही अपने प्यारे प्यारे आका महबूबे बारी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की नाराज़ी महसूस की फ़ौरन न सिर्फ़ गुलाम की पिटार्ई से अपना हाथ रोक लिया बल्कि अपने इस कुसूर का ए'तिराफ़ करते हुए उस के कफ़ारे में गुलाम को आज़ाद कर दिया। आह !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (माम)

आज लोग अपने ज़ेर दस्तों को बिला ज़रूरते शर-ई झाड़ते, लताड़ते, उन पर दहाड़ते चिंघाड़ते वक़्त इस बात की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं देते कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जो हम से ज़बर दस्त है वोह हमारे जुल्मो उद्वान को देख रहा है। यकीनन अपने मा तहतों के साथ नरमी व हुस्ने सुलूक, और अफ़वो दर गुज़र से काम लेने ही में अफ़ियत है। चुनान्चे

### नमक ज़ियादा डाल दिया

कहते हैं, एक आदमी की बीवी ने खाने में नमक ज़ियादा डाल दिया। उसे गुस्सा तो बहुत आया मगर येह सोचते हुए वोह गुस्से को पी गया कि मैं भी तो ख़ताएं करता रहता हूं अगर आज मैं ने बीवी की ख़ता पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोजे कियामत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ भी मेरी ख़ताओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले। चुनान्चे उस ने दिल ही दिल में अपनी जौजा की ख़ता मुआफ़ कर दी। इन्तिकाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कसरत के सबब अज़ाब होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने सालन में नमक ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़ता मुआफ़ कर दी थी, जाओ मैं भी उस के सिले में तुम को आज मुआफ़ करता हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत

हदीसे पाक में है : जो शख्स अपने गुस्से को रोकेगा अल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (क़ुरआन)

क़ियामत के रोज़ उस से अपना अज़ाब रोक देगा ।

(شعب الایمان ج ٦ ص ٣١٥ حدیث ٨٣١١)

## जवाबी कारवाई पर शैतान की आमद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई हम से उलझे या बुरा भला कहे उस वक़्त ख़ामोशी में ही हमारे लिये अफ़ियत है अगर्चे शैतान लाख वस्वसे डाले कि तू भी उस को जवाब दे वरना लोग तुझे बुज़दिल कहेंगे, मियां ! शराफ़त का ज़माना नहीं है इस तरह तो लोग तुझ को जीने भी नहीं देंगे वग़ैरा वग़ैरा । मैं एक हदीसे मुबा-रका बयान करता हूं इस को ग़ौर से समाअत फ़रमाइये, सुन कर आप को अन्दाज़ा होगा कि दूसरे के बुरा भला कहते वक़्त ख़ामोश रहने वाला रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर नज़दीक तर होता है । चुनान्चे मुस्नदे इमाम अहमद में है, किसी शख़्स ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मौजू-दगी में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुरा कहा तो जब उस ने बहुत ज़ियादती की । तो उन्हों ने उस की बा'ज़ बातों का जवाब दिया (हालां कि आप की जवाबी कारवाई मा'सियत से पाक थी मगर) सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वहां से उठ गए । सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पीछे पहुंचे, अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह मुझे बुरा कहता रहा आप तशरीफ़ फ़रमा रहे, जब मैं ने उस की बात का जवाब दिया तो आप उठ गए, फ़रमाया :  
“तेरे साथ फ़िरिश्ता था जो उस का जवाब दे रहा था, फिर जब तू ने



فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُذْجِلٌ عَلَى دُرُودِ شَرِيفٍ يَدُو اَللّٰهُ اَعْلٰهُ تُوْمَ عَلَى رَهْمَتِ  
 اَبْنِ مَعْدِي (ابن معدي)

खुद उसे जवाब देना शुरू किया, तो शैतान दरमियान में आ कूदा।”

(مسند امام احمد بن حنبل ج ۳ ص ۴۳۴ حدیث ۹۶۳۰)

## जो चुप रहा उस ने नजात पाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को बोल कर बारहा पछताना पड़ा होगा मगर खामोश रह कर कभी नदामत नहीं उठाई होगी। तिरमिज़ी शरीफ़ में है, “مَنْ صَمَتَ نَجَا” या’नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई।” (مسند الترمذی ج ۴ ص ۲۲۵ حدیث ۲۵۰۹ دار الفکر بیروت) और येह मुहा-वरा भी ख़ूब है, “एक चुप सो<sup>100</sup> को हराए।”

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## कर भला हो भला

हज़रते सय्यिदुना शैख़ सा’दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बोस्ताने सा’दी में नक़ल करते हैं : एक नेक सीरत शख़्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्क भी बुराई से न करता था। जब भी किसी की बात छिड़ती, उस की ज़बान से नेक कलिमा ही निकलता। उस के मरने के बा’द किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो सुवाल किया : يا’नी اَللّٰهُ بِكَ ؟ येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की तरह शीरीं आवाज़ में बोला : “दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और यूं मेरा मुआ-मला बहुत अच्छा रहा।”

(بوستان سعدی ص ۱۴۴ باب المدینه کراچی)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पदो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (भा.मि.)

## नरमी ज़ीनत बख़्शाती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया, नरमी और अफ़वो दर गुज़र करने से अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عُزَّ وَجَلَّ की किस क़दर रहमत होती है। काश ! हम भी अपनी बे इज़्ज़ती करने वालों या सताने वालों को मुआफ़ करना इख़्तियार करें। मुस्लिम शरीफ़ में है : जिस चीज़ में नरमी होती है उसे ज़ीनत बख़्शाती है और जिस चीज़ से जुदा कर ली जाती है उसे ऐबदार बना देती है।

(صحیح مسلم ص ۱۳۹۸ حدیث ۲۵۹۴ دار ابن حزم بیروت)

## पेशगी मुआफ़ करने की फ़ज़ीलत

एहूयाउल इलूम में है : एक शख़्स दुआ मांग रहा था, “या अल्लाह عُزَّ وَجَلَّ ! मेरे पास स-दक़ा व ख़ैरात के लिये कोई माल नहीं बस येही कि जो मुसल्मान मेरी बे इज़्ज़ती करे मैं ने उसे मुआफ़ किया।” सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर वहूय आई, “हम ने इस बन्दे को बख़्श दिया।”

(احیاء العلوم ج ۳ ص ۲۱۹ دار صادر بیروت)

## गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर

अबू दावूद की हदीस में है : जिस ने गुस्से को ज़ब्त कर लिया हालां कि वोह उसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो अल्लाह عُزَّ وَجَلَّ बरोजे क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे ले ले।

(سنن ابی داؤد ج ۴ ص ۳۲۶، ۳۲۵ حدیث ۴۷۷۷ دار احیاء التراث العربی بیروت)

## हि़साब में आसानी के तीन अस्बाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि तीन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عُزْرَجُلُ उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता और क़ीरात उहूद पहाड़ जितना है। (मैराज़)

बातें जिस शर्ख़्स में होंगी अल्लाह तअ़ाला (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान तरीक़े से लेगा और उस को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (1) जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो (2) और जो तुम से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से मिलाप करो (3) और जो तुम पर जुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो।

(المعجم الاوسط ج ٤ ص ١٨ حديث ٥٠٦٤ دارالكتب العلمية بيروت)

### गालियों भरे खुतूत पर आ'ला हज़रत का सब्र

काश ! हमारे अन्दर येह जज़्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़्स की खातिर गुस्सा करना ही छोड़ दें। जैसा कि हमारे बुजुर्गों का जज़्बा होता था कि उन पर कोई कितना ही जुल्म करे येह हज़रत उस ज़ालिम पर भी शफ़क़त ही फ़रमाते थे। चुनान्वे “हयाते आ'ला हज़रत” में है, आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई तो बा'ज़ खुतूत मुग़ल्लज़ात (या'नी गालियों) से भरपूर थे। मो'तकिदीन बरहम हुए कि हम इन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर करेंगे। इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने इर्शाद फ़रमाया : “जो लोग ता'रीफ़ी खुतूत लिखते हैं पहले उन को जागीरें तक़सीम कर दो, फिर गालियां लिखने वालों पर मुक़द्दमा दाइर कर दो।” (हयाते आ'ला हज़रत, जि. 1, स. 143, 144, मुलख़ब़सन मक्तबए न-बविय्यह मर्कज़ुल औलिया लाहोर) मतलब येह कि जब ता'रीफ़ करने वालों को तो इन्आम देते नहीं फिर बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

## मालिक बिन दीनार के सब्र के अन्वार

हमारे बुजुगानि दीन رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِينِ जुल्मे ज़ालिमीन और सितमे काफ़िरीन पर सब्र फ़रमाते और किस तरह गुस्से को भगाते थे इसे इस हिक्कायत से समझने की कोशिश कीजिये। चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक मकान किराए पर लिया। उस मकान के बिल्कुल मुत्तसिल एक यहूदी का मकान था। वोह यहूदी बुज़ो इनाद की बुन्याद पर परनाले के ज़रीए गन्दा पानी और ग़लाज़त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के काशानए अ-ज़मत में डालता रहता। मगर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़ामोश ही रहते। आख़िरे कार एक दिन उस ने खुद ही आ कर अर्ज़ की, जनाब ! मेरे परनाले से गुज़रने वाली नजासत की वजह से आप को कोई शिकायत तो नहीं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने निहायत ही नरमी के साथ फ़रमाया, “परनाले से जो गन्दगी गिरती है उस को झाड़ू दे कर धो डालता हूँ।” उस ने कहा, आप को इतनी तकलीफ़ होने के बा वुजूद गुस्सा नहीं आता ? फ़रमाया : आता तो है मगर पी जाता हूँ क्यूं कि : (पारह 4 सूए आले इमरान आयत नम्बर 134 में) खुदाए रहमान عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने महबूबत निशान है :

وَالْكَاطِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ  
عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ  
الْمُحْسِنِينَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) के महबूब हैं। (प ६ अल عمران १३६)

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (सुल)

जवाब सुन कर यहूदी मुसलमान हो गया। (तذक़रे الاولياء ص ५१)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी

बदलती हज़ारों की तक्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नरमी की कैसी

ब-र-कतें हैं ! नरमी से मु-तअस्सिर हो कर वोह यहूदी मुसलमान हो गया।

नेक बन्दे च्यूंटियों को भी ईज़ा नहीं देते

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दे की एक अलामत येह भी है

कि वोह गुस्से में आ कर मुसलमानों को तो क्या तक्लीफ़ देगा

च्यूंटियों तक को ईज़ा देने से गुरेज़ करता है। चुनान्चे हज़रते

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٌ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक नेक कार ज़रूर चैन में हैं।

الَّذِينَ لَا يُؤْذُونَ الدَّرَّ : (प ३०, المطففين २२) की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं :

या'नी नेक बन्दे वोह हैं जो च्यूंटियों को भी अज़ियत न दें।

(तफ़्सीर حسن بصرى ج ५ ص २६६ باب المدينه كراچى)

क्या गुस्सा हराम है ?

अवाम में येह ग़लत मशहूर है कि “गुस्सा हराम है।” गुस्सा

एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इन्सान को आ ही जाता है, इस में इस का

कुसूर नहीं, हां गुस्से का बे जा इस्ति'माल बुरा है। बा'ज सूरतों में

गुस्सा ज़रूरी भी है म-सलन जिहाद के वक़्त अगर गुस्सा नहीं आएगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के दुश्मनों से किस तरह लड़ेंगे ! बहर हाल गुस्से का इज़ाला (या'नी इस का न आना) मुम्किन नहीं “इमाला” होना चाहिये या'नी गुस्से का रुख दूसरी तरफ़ फिर जाना चाहिये। म-सलन कोई दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले बुरी सोहबत में था, गुस्से की हालत येह थी कि अगर किसी ने हां का ना कह दिया तो आपे से बाहर हो गया और गालियों की बोछाड़ कर दी, किसी ने बद तमीज़ी कर दी तो उठा कर थप्पड़ जड़ दिया। मतलब कोई भी काम ख़िलाफ़े मिज़ाज हुवा, गुस्सा आया तो सब्र करने के बजाए नाफ़िज़ कर दिया। जब उसे खुश किस्मती से दा 'वते इस्लामी का म-दनी माहोल मुयस्सर आ गया और दा 'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कतें ज़ाहिर होने लगीं और गुस्से का “इमाला” हो गया या'नी रुख़ बदल गया या'नी अब भी गुस्सा तो बाक़ी है मगर इस का रुख़ यूं तब्दील हुवा कि इसे अल्लाह व रसूल और सहाबा व औलिया عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दुश्मनों से बुग़ज़ हो गया मगर खुद उस की अपनी ज़ात को कोई कितना ही बुरा भला कहे, गुस्सा दिलाए मगर सब्र करता है, दूसरों पर बिफरने के बजाए खुद अपने नफ़्स पर गुस्सा नाफ़िज़ करता है कि तुझे गुनाह नहीं करने दूंगा। अल ग़रज़ गुस्सा तो है मगर अब उस का “इमाला” हो गया, या'नी रुख़ बदल गया जो कि आख़िरत के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (ابن ن)।

## दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

हृदीसे पाक में है, “जिस शख्स ने गुस्सा ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा ।”

(الحمام الصغیر للسيوطی ص ۵۴۱ حدیث ۸۹۹۷ دارالکتب العلمیة بیروت) या'नी अगर किसी की तरफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंच गई और गुस्सा आ गया येह बदला ले सकता था मगर महज़ रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ की खातिर गुस्सा पी गया तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस को सुकूने क़ल्ब अता फ़रमाएगा और उस का दिल नूरे ईमान से भर देगा । इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ अवकात गुस्सा आना मुफ़ीद भी है जब कि ज़ब्त करना नसीब हो जाए ।

## चार यार की निस्बत से गुस्से की आदत निकालने के लिये 4 अवरद



जिस को गुस्सा गुनाह करवाता हो उसे चाहिये कि हर नमाज़ के बा'द بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 21 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले । खाना खाते वक़्त तीन तीन बार पढ़ कर खाने और पानी पर भी दम कर ले ।



चलते फिरते कभी कभी يَا اللّٰهَ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِیْمُ कह लिया करे ।



चलते फिरते يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ पढ़ता रहे ।



पारह 4 आले इमरान की 134 वीं आयत का येह हिस्सा

وَالْكَاطِبِیْنَ الْعِیْظِ وَالْعَافِیْنَ

عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ (پ ۴ ال عمران: ۱۳۴)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عزَّ وَّعَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्म)

## “अख़लाके रहमते अ़लम” के तेरह हुस्फ़ की निस्बत से गुस्से के 13 इलाज

जब गुस्सा आ जाए तो इन में से कोई भी एक या ज़रूरतन सारे इलाज फरमा लीजिये :



1. اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़िये ।



2. وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ पढ़िये ।



3. चुप हो जाइये ।



4. वुजू कर लीजिये ।



5. नाक में पानी चढ़ाइये ।

खड़े हैं तो बैठ जाइये ।

बैठे हैं तो लेट जाइये और ज़मीन से चिपट जाइये ।

अपने ख़द (या'नी गाल) को ज़मीन से मिला दीजिये

(वुजू हो तो सज्दा कर लीजिये) ताकि एहसास हो कि मैं

खाक से बना हूँ लिहाज़ा बन्दे पर गुस्सा करना मुझे ज़ैब

नहीं देता ।

(احياء العلوم ج 3 ص 388, 389)



9. जिस पर गुस्सा आ रहा है उस के सामने से हट जाइये ।



10. सोचिये कि अगर मैं गुस्सा करूंगा तो दूसरा भी गुस्सा करेगा

और बदला लेगा और मुझे दुश्मन को कमज़ोर नहीं समझना



فرمانے میں فرمایا: صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: جو شخص غضب پر دुरूہے پاک پدنا بھूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (بخاری)

चाहिये।



अगर किसी को गुस्से में झाड़ वगैरा दिया तो खुसूसियत के साथ सब के सामने हाथ जोड़ कर उस से मुआफ़ी मांगिये, इस तरह नफ़्स ज़लील होगा और आयिन्दा गुस्सा नाफ़िज़ करते वक़्त अपनी ज़िल्लत याद आएगी और हो सकता है यूं करने से गुस्से से ख़लासी मिल जाए।



येह ग़ौर कीजिये कि आज बन्दे की ख़ता पर मुझे गुस्सा चढ़ा है और मैं दर गुज़र करने के लिये तय्यार नहीं हलां कि मेरी बे शुमार ख़ताएं हैं अगर अल्लाह غَرْوَ جَلَّ नाक हो गया और उस ने मुझे मुआफ़ी न दी तो मेरा क्या बनेगा!



कोई अगर ज़ियादती करे या ख़ता कर बैठे और उस पर नफ़्स की ख़ातिर गुस्सा आ जाए उस को मुआफ़ कर देना कारे सवाब है। तो गुस्सा आने पर ज़ेहन बनाए कि क्यूं न मैं मुआफ़ कर के सवाब का हक़दार बनूं और सवाब भी कैसा ज़बर दस्त कि “क़ियामत के रोज़ ए’लान किया जाएगा जिस का अज़्र अल्लाह غَرْوَ جَلَّ के ज़िम्मए कर्म पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा किस के लिये अज़्र है? वोह कहेगा: “उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं।” तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

(المُعْتَمَدُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ١ ص ٥٤٢ حديث ١٩٩٨، دارالفكر بيروت)

## सुन्नत की बहारें

تَحْلِيلُ اللَّحْمِ कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सिधसो तहरीक चा'बते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतों सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इश्रा की नवाब के बा'द आप के तहर में होने वाले दा'वते इस्लामो के हफ्तावार सुन्नतों भरे इतिमाअ में रिवाज इलाही के लिये अच्छी अच्छी विषयों के सब सारी रात गुजरने की म-दनी इतिजा है। आशिकाने रमूल के म-दनी क़ाफिलों में ब निपटरे सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोवाना फ़िके मदीना के ज़रीफ़ म-दनी इन्शामात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने वहाँ के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का चा'भूल बना लीकिये ۱۰ قَاءَ اللَّهُ تَزِيلاً ۱۰ इस की ब-र-कत से सबदे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़त करने और ईमान की ठिफ़ावत के लिये जुद्धे का ज़ेहन बनेवा।

हर इस्लामी चाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ۱۰ قَاءَ اللَّهُ تَزِيلاً ۱۰" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्शामात" पर अज़ल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफिलों" में सफ़र करना है ۱۰ قَاءَ اللَّهُ تَزِيلاً ۱۰

## माक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी चेस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मइल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

वागपूर : ग़ाीब नवाब मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुच, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दौरेन मस्जिद, नाला बाजार, स्टेशन रोड, दरागह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुगल पुग, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786



माक-त-बतुल मदीना

चा'बते इस्लामी

फ़ैजाणे मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net